हिन्दी नाटक:स्वरूप एवं विकास

प्रस्तुति

डॉ0 रमेश प्रताप सिंह
असि0 प्रो0 हिन्दी विभाग
श्री जे0एन0एम0पी0जी0कॉलेज, लखनऊ

अर्थ एवं स्वरूप

- पाणिनि नाटक की उत्पत्ति 'नट' धातु से मानते हैं ।
- नाटक शब्द 'नट' धातु से बना है जिसका अर्थ है अभिनय ।
- नाटक साहित्य की वह विधा है जिसका परीक्षण रंगमंच पर होता है ।
- रंगमंचीय गयात्मकता ही नाटक का मूल है और इसकी भाषा हरकत की होती है।
- देवता, मनुष्य, राजा एवं महात्माओं के पूर्ववृत्त की अनुकृति को नाटक कहते हैं। (भरतमुनि)

अभिनय के लिए प्रयोग किये जाने वाले शब्द या वाक्य तभी सार्थक माने जाते हैं,जब वे कायिक,वाचिक,सात्विक एवं आहार्य अभिनय को उकसाते या प्रेरित करते हैं । नाट्य-प्रदर्शन को कालिदास ने “ चाक्षुष यज्ञ” कहा है ।

• नाटक साहित्य की परम्परा अत्यंत प्राचीन है। संस्कृत साहित्य में इसका लम्बा इतिहास है किंतु मध्यकाल में प्रेक्षागृहों और नाटकों का क्रमशः ह्रास होता गया । मनु और याज्ञवल्क्य स्मृतियों में नटों के प्रति हेय भाव व्यक्त किये जाने के कारण इसकी प्रतिष्ठा घटी ।इसमें बहुत बड़ा हाथ विदेशी आक्रमणकारियों का भी माना जा सकता है ।

- मध्यकाल में लोकधर्मी नाटकों का खूब प्रचार प्रसार हुआ। उत्तर भारत में 'लीला' 'रास' और 'नौटंकी' ,मध्यभारत में 'ख्याल' गुजरात मे 'भवाई ' बंगाल में 'जात्रा ' बिहार में ' कीर्ति' और 'अंकिया' महाराष्ट्र में ' ललित' और 'दसावतार' दक्षिण में ' यक्षगान' के रूप में चर्चित एवं बराबर जीवित रहे।

हिन्दी नाटकों का विकास

भारतेन्दु युग- 1850 से 1900

द्विवेदी युग- 1900 से 1920

प्रसाद युग - 1920 से 1936

प्रसादोत्तर युग- 1936 से आद्यतन

भारतेन्दु युग : महत्वपूर्ण तथ्य

- इस युग के नाटककारों ने अपने नाटकों के माध्यम से राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना का नवोन्मेष किया ।
- मनोरंजन के साथ- साथ उचित शिक्षा का संदेश दिया ।
- अभिनय एवं मनोविनोद के साथ -साथ समाज सुधार और युगीन नवजागरण का संदेश अपने नाटकों के माध्यम से दिया ।

- समाज के यथार्थ को दिखकर जनता को झकझोरने का काम किया।

- इस युग के नाटककारों ने अपने युग के विविध धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि समस्याओं को अपने प्रहसनों एवं नाटकों में रेखांकित किया और उनका पुनरुत्थानवदी समाधान प्रस्तुत किया।

- नारी के चरित्र एवं देश प्रेम का महत्व जनता के सामने रखा । राष्ट्रीय जागरण, भाषा, संस्कृति एवं चरित्र बल पर विशेष महत्व दिया।

भारतेंदु युग के प्रमुख नाटक एवं नाटककार

- भारतेंदु हरिश्चंद्र-- वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति, सत्य हरिश्चंद्र, विषस्य बिषामौषधम, भारत दुर्दशा, नीलदेवी, अंधेर नगरी।
- देवकीनन्दन खत्री --सीताहरण
- शीतला प्रसाद त्रिपाठी -- रामचरितावली
- श्रीनिवासन दास-- । प्रह्लाद चरित्र, रणधीर प्रेममोहिनी।
- बालकृष्ण भट्ट-- नलदमयन्ती स्वयंवर
- राधाचरण गोस्वामी-- अमरसिंह राठौर
- राधाकृष्ण दास-- दुखिनी बाला आदि ।

द्विवेदी युग :महत्वपूर्ण तथ्य

- यह युग नाटक की दृष्टि से सबसे कम समृद्ध था । सबसे कम नाटक इसी युग मे लिखे गये।

- इस युग में पौराणिक, ऐतिहासिक, समसामयिक उपादानों, रोमांचकारी ,प्रहसन, अनुदित आदि प्रकार के नाटकों का सृजन हुआ ।

- इस युग मे मौलिक नाटकों का सृजन कम हुआ, अनुदित नाटकों का सृजन अधिक हुआ ।

द्विवेदी युग के प्रमुख नाटक और नाटककार

- बनवारी लाल- कंसवध
- नारायण सहाय-- रामलीला
- लक्ष्मीप्रसाद -- उर्वशी
- जयशंकर प्रसाद -- करुणालय, राजश्री
- बद्रीनाथ भट्ट --कुरुवन दहन, चंद्रगुप्त
- वृन्दावन लाल -- सेनापति ऊदल
- प्रतापनारायण मिश्र-- भारत दुर्दशा
- भगवती प्रसाद--वृद्ध विवाह
- मिश्रबंधु -- नेत्रोंमीलन आदि ।

प्रसाद युग : महत्वपूर्ण तथ्य

- यह युग हिंदी नाट्य साहित्य के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ता है। इस युग के प्रवर्तक के रूप में प्रसाद जी को सभी विद्वान एक मत से स्वीकारते हैं । प्रसाद जी ने हिन्दी नाट्य सृजन को नई शैली दी, नूतन प्राण-प्रतिष्ठा की ।

- प्रसाद जी ने भारतीय और पाश्चात्य नाट्य विधान के अंतर्द्वंद्व का सुंदर समन्वय कर नूतन नाट्य-विधान का विकास किया ।

- प्रसाद युग मे सामाजिक, धार्मिक राजनैतिक, ऐतिहासिक, पौराणिक, रोमांटिक, यथार्थवादी, आदि प्रकार के नाटकों का निर्माण हुआ है ।

- प्रसाद युग के नाटककारों ने अपने नाटकों के माध्यम से स्वतंत्रता-संघर्ष एवं सामाजिक मूल्यों को प्रमुखता से रूपायित किया है ।

- प्रसाद युग मे ही यथार्थवादी एवं समस्या नाटकों का विकास हो जाता है और व्यंग्यमूलक सामाजिक नाटक लिखे जाने लगे थे किंतु उनमें रूढ़ि-भंजक वह बौद्धिकता नहीं मिलती ।

प्रसाद युग के प्रमुख नाटक एवं नाटककार

- जयशंकर प्रसाद --अजातशत्रु, कामना, जनमेजय का नागयज्ञ , स्कन्दगुप्त, चन्द्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी।
- अम्बिकादत्त त्रिपाठी- सीय स्वयंवर
- लक्ष्मीनारायण गर्ग -- श्रीकृष्णावतार
- सेठ गोविंददास --कर्तव्य
- प्रेमचंद -कर्बला ,संग्राम
- उदयशंकर भट्ट -- विक्रमादित्य
- गोबिंदबल्लभ पन्त -- कंजूस की खोपड़ी
- बेचन शर्मा उग्र --चुम्बन, डिक्टेटर आदि ।

प्रसादोत्तर : महत्वपूर्ण तथ्य

- इस युग के नाटककारों ने यथार्थवादी नाट्य शैली एवं रंग-शिल्प के आधार पर जीवन के यथार्थ से जुड़कर यथार्थवादी -समस्या नाटक लिखने लगे ।

- इस युग के नाटकों को स्थूल रूप से तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है -

1- स्वतन्त्र भारत मे व्याप्त भ्रष्टाचार से सम्बद्ध नाटक

2- पीढ़ीगत संघर्षों का नैतिक मूल्यों से सम्बद्ध नाटक

3- चीनी आक्रमण से सम्बद्ध नाटक।

प्रसादोत्तर युग के प्रमुख नाटक एवं नाटककार

- उदयशंकर भट्ट --विक्रमादित्य, मुक्तिपथ,
- लक्ष्मीनारायण मिश्र --अशोक, दशाश्वमेध, वितस्ता की लहरें
- वृन्दावन लाल वर्मा-- झाँसी की रानी, कश्मीर का कांटा,
- जगदीश चंद्र माथुर -- कोणार्क, पहला राजा
- मोहन राकेश -- आषाढ़ का एक दिन, लहरों के राजहंस,
- हरिकृष्ण प्रेमी -- प्रतिशोध,आहुति, विषपान, साँपो की सृष्टि, रक्तदान
- गोविंदवल्लभ पन्त --सुहाग बिंदी, ययाति
- विपिन कुमार --तीन अपाहिज आदि ।

सारांश

निष्कर्षतः हिन्दी नाट्य सहित्य का जन्म 19 वीं शताब्दी में हुआ । अध्ययन की दृष्टि से इसे कई युग में विभाजित किया गया। प्रसाद जी का नाटक के मंच पर आविर्भाव एक नये अध्याय को जोड़ता है । प्रसाद जी के बाद जगदीश चंद्र माथुर,मोहन राकेश, लक्ष्मी नारायण लाल, लक्ष्मीकांत वर्मा, नरेन्द्र कोहली, जैसे अनेक नाटककारों ने नाटकों को विविध रूप दिया जिनमे -नया नाटक, एब्सर्ड नाटक,जनवादी नाटक नुक्कड़ नाटक,प्रतीक नाटक आदि प्रमुख हैं ।

सन्दर्भ

- हिन्दी साहित्य कोश- डॉ0 धीरेंद्र वर्मा
- हिंदी नाटक :उद्भव और विकास- डॉ0 दशरथ ओझा
- हिंदी साहित्य का इतिहास- डॉ0 नगेन्द्र
- एम0 एच0 डी0 -06 (इग्नू बुकलेट)

धन्यवाद